आई.एस.एस.एन. संख्या : 2454–2458
नवरचना NAVRACHNA
www.grefiglobal.org/journals/navrachna.2018
वर्ष 4, अंक 1–2, जून–दिसम्बर 2018, पृ. 39–42

आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण

स्वीटी जैन*

सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र आर्थिक विकास के परिप्रेक्ष्य में पर्यावरण संरक्षण पर आधारित है। पर्यावरण और विकास एक सिक्के के दो पहलू है और प्राकृतिक संसाधनों के बिना आर्थिक विकास संभव नहीं है। पर्यावरण सुरक्षा में केन्द्र व राज्य सरकारों के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिये जा रहे हैं। परन्तु इसके बावजूद भी पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों को वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुये हैं। पर्यावरणीय असुरक्षा की समस्या को सफल बनाना ही इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य है।

भारतीय संस्कृति के विकास और समृद्धि में वनों का महत्वपूर्ण स्थान है। वन केवल जलाने मात्र के लिए लकड़ी ही प्रदान नहीं करते, वरन् ये एक अमूल्य राष्ट्रीय सम्पत्ति हैं। वनों के अभाव में मानव की आर्थिक क्रियाओं कल्पना ही नहीं की जा सकती। वन प्रत्यक्ष रुप से लकड़ी, औषधियां और विविध कच्चे पदार्थ प्रदान करते हैं तथा अप्रत्यक्ष रुप से जलवायु को अत्यधिक प्रभावित करते हैं। देश की समृद्धि में वनों के महत्वपूर्ण योगदान के सम्बन्ध में स्वर्गीय श्री सरदार पटेल ने कहा था, 'यदि हम राष्ट्रीय समृद्धि में वृद्धि करना चाहते हैं तो वृक्षों का उपयोग हमारी राष्ट्रीय नीति का महत्वपूर्ण अंग होना चाहिये।' स्वर्गीय पंड़ित नेहरु का विचार था कि 'उगता हुआ पेड़ प्रगतिशील राष्ट्र का प्रतीक है।' हमें वनों का प्रयोग उतनी ही मात्रा में करना चाहिये जितने की हमें आवश्यकता है। प्रकृति तभी तक हमारा साथ देती है जब तक उसके नियमों के मुताबिक उससे लिया जाये। वृक्षों का संरक्षण भारतीय संस्कृति की पंरपरा रही है परन्तु वर्तमान में मानव द्वारा पुरातन परम्पराओं से विमुख हो रहा है जिसके प्रति सजगता की आवश्यकता है।

पर्यावरण भौतिक वातावरण का द्योतक है। आजकल के यान्त्रिक और औद्योगिक युग में इसको प्रदूषण से बचाना अनिवार्य है। सामान्य जीवन प्रक्रिया में जब अवरोध होता है तब पर्यावरण की समस्या जन्म लेती है। यह अवरोध प्रकृति के कुछ तत्वों के अपनी मौलिक अवस्था में न रहने और विकृत हो जाने से प्रकट होता है। इन तत्वों में जल, वायु, मिट्टी आदि प्रमुख है। पर्यावरणीय समस्याओं से मनुष्य अन्य जीवधारियों को अपना सामान्य जीवन जीने में कठिनाई होने लगती है।

***शोध छात्रा, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ– 250 004 उ. प्र.।**

पिछले सौ वर्षों में वायुमण्डल का तापमान 3 से 6 डिग्री सेल्सियस बढ़ा है। लगातार बढ़ते तापमान से दोनों ध्रुवों पर बर्फ गलने लगी। अनुमान लगाया गया है कि इससे समुद्र का जलस्तर दो मीटर बढ़ गया तो मालद्वीप और बांग्लादेश जैसे निचाई वाले देश डूब जायेंगे। इसके अलावा मौसम में बदलाव आ सकता है। कुछ क्षेत्रों में इसके कारण सूखा पड़ेगा तो कुछ जगहों पर तूफान और भारी वर्षा हो सकती है। इन सभी समस्याओं से भारतीय संस्कृति को बचाना है तो पर्यावरण को सुरक्षित करना नितान्त आवश्यक है।

प्रदूषक गैसें मनुष्य और जीवधारियों में अनेक जानलेवा बीमारियों का कारण बन सकती हैं। एक अध्ययन से ज्ञात हुआ है कि वायु प्रदूषण से केवल 36 शहरों में प्रतिवर्ष 51,779 लोगों की अकाल मृत्यु हो जाती है। कलकत्ता, कानपुर तथा हैदराबाद में वायु प्रदूषण से होने वाली मृत्युदर पिछले 3–4 सालों से दुगनी हो गई है। एक अनुमान के अनुसार भारतवर्ष में प्रदूषण के कारण हर दिन करीब 150 लोग मरते हैं और सैकड़ों लोगों को फेफड़ों और हृदय की जानलेवा बीमारियां हो जाती हैं। हमें इस प्रकार के प्रदूषण को रोकने के प्रयत्न करने होंगे तथा मानव की होती बर्बादी को बचाना होगा। इस प्रकार अकाल मृत्यु के कारण भारतीय समाज को क्षति पहुंच रही है।

औद्योगीकरण और शहरीकरण से जुड़ी एक दूसरी समस्या है– जल प्रदूषण। बहुत बार उद्योगों का रासायनिक कचरा और प्रदूषित पानी तथा शहरी कूड़ा–करकट नदियों में छोड़ दिया जाता है, इससे नदियां अत्यन्त प्रदूषित होने लगती हैं। भारत में कई ऐसी नदियां हैं जिनका जल अब अशुद्ध हो चुका है। इनमें पवित्र गंगा, जिसको हमारे पूर्वजों के समय से पूजा जाता रहा है, भी शामिल है। आज प्रदूषण के कारण पवित्र नदियां भी दूषित हो गई हैं, जो हमारे लिये अत्यन्त दुखद विषय है। दूषित पानी पीने से ब्लड कैंसर, जिगर कैंसर, हड्डी रोग, हृदय एवं गुर्दों की तकलीफें और पेट की अनेक बीमारियां हो सकती हैं। जिसके कारण हमारे देश के हजारों लोग प्रतिवर्ष मृत्यु को प्राप्त हो जाते हैं। नदियों की पवित्रता को बनाये रखना तथा इनको गन्दगी से बचाना हमारा हमारा परम कर्त्तव्य है।

वनों की कटाई एक मुख्य पर्यावरण समस्या है। वनों के विनाश के कारण वन्य जीव लुप्त हो रहे हैं। वनों के क्षेत्रफल में लगातार होती कमी के कारण भूमि का कटाव और रेगिस्तान का फैलाव बड़े पैमाने पर होने लगता है। वन मन्त्रालय की रिपोर्ट के अनुसार 2005 में देश में मूल 6,77,088 वर्ग किमी० वन क्षेत्र था। केन्द्रीय वन एवं पर्यावरण मन्त्रालय की रिपोर्ट 01 दिसम्बर 2009 के अनुसार देश में कुल वन क्षेत्र में 728 किमी० की वृद्धि 2005–2007 के दौरान हुई तथा वर्ष 2007 में देश में वन क्षेत्र के देश के कुल भूभाग का 21.02 प्रतिशत हो गया। इस प्रकार देश में कुल वन क्षेत्र 6,77,088 व 6,77,816 वर्ग किमी० वर्ष 2007 में हो गया था किन्तु यदि पूरे भारत देश की वन स्थिति की तुलना अन्य देशों से करें तो भी भारत की स्थिति दयनीय है। भारत में 21.02 प्रतिशत वन क्षेत्र है जबकि जर्मनी में यह 28 प्रतिशत, अमेरिका में 33 प्रतिशत, जापान में 62 प्रतिशत, फिनलैण्ड में 71 प्रतिशत व थाईलैण्ड में 77 प्रतिशत है। साथ ही भारत में विश्व की जनसंख्या का 17 प्रतिशत निवास करती है, लेकिन यहां विश्व के वनों का केवल 2 प्रतिशत भाग ही पाया जाता है। इस प्रकार भारत में प्रति

व्यक्ति वन क्षेत्र 671 वर्ग मीटर है जबकि वैज्ञानिकों के अनुसार कम से कम 1,605 वर्ग मीटर होना चाहिये, परन्तु तब से अब तक वन क्षेत्र में कोई वृद्धि नहीं हो पायी है।

बहुमुखी विकास, निरन्तर तीव्र औद्योगीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन एवं तेजी से बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण पर्यावरण संरक्षण, संर्वद्धन एवं सन्तुलन विश्व की ज्वलंत चुनौती बन गया है। आज हम सभी को पर्यावरण के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है।

प्रकृति हम लोगों की संरक्षक एवं पोषक है। स्वस्थ विकास वही है, जिसमें हम प्रकृति की मूल सम्पदा को बचाये रखते हुए, उसके ब्याज से काम चलाते रहे और उसे देश की भावी पीढ़ियों के लिये बचाकर और संजोकर रखें। वनों के प्रति सजग न रहना और भावी पीढ़ियों की चिन्ता न करना उनके प्रति अन्याय है। पर्यावरण के महत्व को हम इन तथ्यों द्वारा समझ सकते हैं कि एक पेड़ से जितनी शीतल छाया हमें मिल सकती है, उतनी पांच एअर कण्डीशनर 20 घण्टे लगातार चलकर देते हैं। 93 घन मीटर में लगा वन 8 डेसीबल ध्वनि प्रदूषण को दूर करता है। एक हेक्टेअर में लगा वन 20 कारों द्वारा उत्पन्न कार्बन डाई आक्साइड एवं धुएं को शोषित करता है। वन राष्ट्रीय एवं वैश्विक पर्यावरण एवं प्राकृतिक सन्तुलन के प्रमुख अंग हैं, परन्तु पिछली शताब्दी में वनों पर बहुत बेरहमी से आक्रमण हुआ है।

वनों की रक्षा हेतु उत्तराखण्ड के चमोली जिले में 'चिपको आन्दोलन' चलाया गया था। इसी प्रकार आन्ध्र प्रदेश में 'शान्ति घाटी आन्दोलन', टिहरी में समाज सेवी सुन्दरलाल बहुगुणा द्वारा भागीरथी की पुकार के साथ 'हिमालय को बचाओ, देश को बचाओ' का नारा दिया गया था। देश के स्वयं सेवी संगठनों द्वारा भी यह नारा दिया गया था कि 'कुल्हाड़ी को बन्द करो, हिमालय को बचाओ' अथवा 'हिमालय बचेगा तो देश बचेगा'। सरकार भी पर्यावरण संरक्षण की दिशा में प्रयत्नशील है। पर्यावरण संरक्षण के लिये केन्द्र एवं राज्य सरकारों द्वारा अनेकों अधिनियम बनाये गये हैं।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद भारत सरकार ने वन विकास की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए सन् 1950 में एक केन्द्रीय वन मण्डल स्थापित किया। इसके दो वर्ष पश्चात् सन् 1952 में सरकार ने राष्ट्रीय वन नीति की घोषणा की जिसके अनुसार देश के कुल क्षेत्रफल के एक तिहाई भाग में वन लगाने का लक्ष्य रखा गया।

1 दिसम्बर 1988 में राष्ट्रीय वन नीति में पुनः संशोधन किया गया। संशोधित वन नीति का मुख्य आधार वनों की सुरक्षा, संरक्षण और विकास है। इसके मुख्य लक्ष्य निम्नलिखित हैं–

1. पर्यावरण स्थिरता
2. मृदा संरक्षण
3. जीव जन्तुओं और वनस्पतियों जैसी प्राकृतिक धरोहर की हिफाजत करना

पर्यावरण सुरक्षा में स्वयं सेवी संगठनों, केन्द्र एवं राज्य सरकारों के द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिये जा रहे हैं परन्तु केन्द्र एवं राज्य सरकारों के इन उपायों के बावजूद भी पर्यावरण संरक्षण के उद्देश्यों के वांछित परिणाम प्राप्त नहीं हुए हैं तथा पर्यावरण असुरक्षा की समस्या निरन्तर बढ़ रही है। यह पर्यावरण सुरक्षा अभियान तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक इसको जन सहयोग पर्याप्त मात्रा में प्राप्त नहीं होता।

अतः पर्यावरण संरक्षण भारत के विकास के लिये अत्यन्त आवश्यक है। हमें अपना पूर्ण सहयोग पर्यावरण संरक्षण के प्रति देना होगा तथा अपनी संस्कृति के नियमों का पालन करना होगा जिन्हें हम भौतिकवाद की अंधी दौड़ में भूलते जा रहे हैं। हमें याद रखना होगा कि वृक्षों की पूजा, वनों का संरक्षण, नदियों की पवित्रता आदि हमारी पुरातन संस्कृति है, जिसको हम भुला नहीं सकते। हमें अपनी भारतीय संस्कृति का स्मरण पुनः करना होगा तथा पर्यावरण संरक्षण के महत्व को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भरपूर प्रयास करने होंगे

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

त्रिपाठी, नरेश चन्द : *भारतीय अर्थव्यवस्था.*

सिंह, निशांत : *वन्य जीव संरक्षण,*

गर्ग, एन. के. पर्यावरण संरक्षण,

सक्सेना एण्ड गुप्ता *भारतीय अर्थव्यवस्था,*

कुलदीप *बदलता पर्यावरण,*

किशोरीलाल *प्रकृति पर्यावरण समस्याएं एवं समाधान,*

वी० सी० सिन्हा *भारतीय आर्थिक समस्याएं,*

दामोदर शर्मा आधुनिक जीवन और पर्यावरण,

www.pragatiparyavaran.org